ISSN 2348-7763

दस्तावेज़

जनवरी-मार्च, 2016 अंक 150

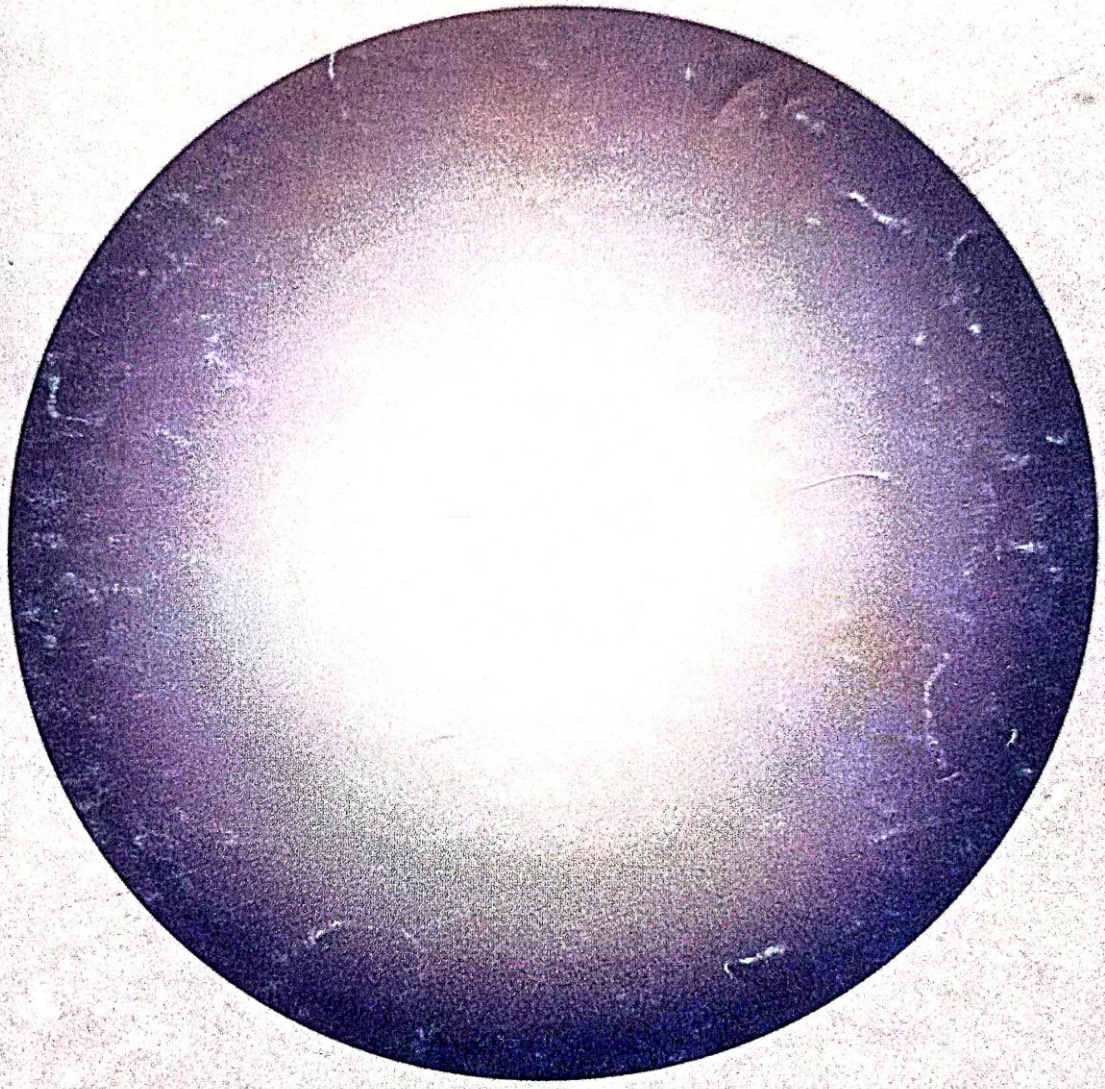

संपादक : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

बौद्ध दर्शन : प्रस्थानों के सैद्धांतिक मतभेद और एकवाक्यता के मूलभूत सूत्र

अंबिकादत्त शर्मा

भगवान् बुद्ध द्वारा प्रवर्तित बौद्ध दर्शन कोई एक दर्शन नहीं अपितु दर्शनों का समूह है। इनका मूल धर्मग्रंथों की सुव्यवस्थित संहिता में न होकर मौखिक रूप से प्रसारित उपदेशों की आकार विहीन परंपरा है। बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद भिक्षु संघों द्वारा विभिन्न संगितियों का आयोजन कर बुद्ध वचनों को सुत्त, विनय और अभिधम्म पिटक के रूप में संहिताबद्ध किया गया। यही त्रिपिटक बौद्ध दर्शनों के संहिताबद्ध आधार हैं। बुद्ध वचनों को तीन ही पिटकों में विभाजित करने का आधार बुद्ध की तीन शिक्षायें (शील, समाधि और प्रज्ञा) और तीन प्रकार की देशनायें (आज्ञा, व्यवहार और परमार्थ) हैं।[1] अन्य धार्मिक परंपराओं की तरह पिटकों में संग्रहित ज्ञान-राशि को अपौरुषेय अथवा दैवीय रूप से प्रकाशित नहीं माना जाता है। यह चेतावनी स्वयं बुद्ध द्वारा ही दी गई है कि उनके उपदेश पौरुषेय प्रमाण की सीमा में हैं और उन्हें श्रद्धाभाव के चलते नहीं बल्कि परीक्षा की कसौटियों पर कस कर ही स्वीकार किया जाना चाहिए।[2]

विवेक का स्वातंत्र्य चूंकि बौद्धानुयायियों को विरासत में मिली है, इसलिए कालांतर में बौद्ध दर्शन का विकास बुद्ध वचनों के वास्तविक तात्पर्य को उद्घाटित करने के प्रयास में हुआ है। मोटे तौर पर बुद्ध वचनों के तात्पर्य का निर्धारण उन्हें नीतार्थ और नेयार्थ मानकर किया जाता है। नीतार्थ वचन वे हैं जिनका अर्थ सीधे-सीधे शब्दशः ग्रहण किया जाता है जबकि नेयार्थ वचन अभिप्रायिक होते हैं।[3] व्याख्या के इस मूलभूत सूत्र के पीछे यह धारणा प्रचलित रही कि बुद्ध के उपदेश एकस्तरीय नहीं बल्कि पात्रों की बौद्धिक क्षमता को ध्यान में रखकर दिए गए हैं।[4] इसी आधार पर यह भी माना जाता है कि बुद्ध ने कम-से-कम तीन धर्मचक्र प्रवर्तनों के द्वारा अपने उपदेशों के आशय को अधिकारीभेद के साथ प्रकट किया है। इसमें प्रथम धर्मचक्र प्रवर्तन सारनाथ में, द्वितीय गृध्रकूट पर्वत् पर और तृतीय वैशाली में किया गया था। तीनों धर्मचक्रों की देशना तीन अलग-अलग प्रकार के पात्रों को संबोधित हैं।

इन्हीं तीनों धर्मचक्र प्रवर्तनों से संबंधित उपदेशों को नीतार्थ अथवा नेयार्थ मानकर बौद्ध विचारधारा का धार्मिक विभाजन हीनयान और महायान में हुआ। हीनयानी बौद्ध प्रथम धर्मचक्र प्रवर्तन को ही बुद्ध की नीतार्थ देशना मानते हैं और व्यक्तिगत मुक्ति (अर्हत-पद) को अपना लक्ष्य मानते हैं। महायानी बौद्ध द्वितीय एवं तृतीय धर्मचक्र प्रवर्तन को बुद्ध की नीतार्थ देशना समझते हैं और प्राणिमात्र का कल्याण तथा सर्वमुक्ति को अपना लक्ष्य घोषित करते हैं।[5] महायानियों की दृष्टि में बुद्धत्व का बीज सभी प्राणियों में है और बुद्ध की देशनायें उसी को व्याकृत करने के उपाय कौशल मात्र हैं। इसीलिए बुद्ध अंतिम रूप से मुक्त होने की पात्रता रखते हुए भी बोधिसत्त्व के रूप में बारम्बार संसार में जन्म लेकर महाकरुणा के संपादन का व्रत लेते हैं। हीनयान और महायान बौद्ध धर्म से संबंधित दार्शनिक संप्रदायों का प्रस्थान भेद भी उनके द्वारा त्रिविध धर्मचक्र प्रवर्तनों से संबंधित बुद्ध वचनों को नीतार्थ और नेयार्थ मानकर अपने-अपने पक्ष में व्याख्यायित करना है। बुद्ध वचनों की नीतार्थ और नेयार्थपरक व्याख्या-पद्धति आपसी मतभेदों के लिए जितना अवकाश निर्मित करती है उतना ही गहरे स्तर पर एकवाक्यता बनाए रखने में भी सहायक होती है। इसीलिए बौद्ध दर्शन के विकास में व्याख्याओं की परस्पर विरोधी बहुलता के बावजूद एक मूलगामी एकता बनी रहती है।

I

हीनयानी बौद्ध परंपरा का दार्शनिक विकास अनगिनत छोटी-बड़ी असहमतियों के बीच आकार ग्रहण किया है। प्रारंभ में चार